4. सफल रेशम उत्पादक कृषक की कहानी

श्री शरत चन्द्र हो तसर चाष श्री शरत चन्द्र हो को विरासत में मिली उनके पिता दिवंगत सीमा हो एक अच्छे तसर किसान थे। उनसे प्रभावित हो के उनके पुत्र श्री शरत भी उसी राह पर चलने लगे। मयूरभंज जिला का केंदुझरगड़ जिले से लगा हुआ करंजिआ उपखंड तथा ठाकुरमुंडा ब्लाक के अंतर्गत सीमीडिहा नामक अत्यंत देहाति ग्राम में 1974 में जन्मे श्री शरद चंद्र हो एक सीधे सादे सरल, मिष्टभाषी, शांत स्वभाव के आदमी हैं शिमलीपाल की प्रकृति की गोद में पलने बढ़ने के बाद कम उम्र में जब वे स्कूल में पढ़ते थे उनके पिताजी का निधन हो गया था। उन्होंने जीवन से संघर्ष करते करते अत्यंत कठिनाइयों से 10 तक की पढ़ाई की तथा परीक्षा पास की। पिताजी के गुजर जाने के बाद सारे परिवार का बोझ बड़ा बेटा होने के नाते उनके उपर पड़ा। अत्यंत गरीबी के कारण वे अपने लिए एक अच्छा मकान भी नही बना पाए। सिर्फ पिताजी का पुआलवाला मिट्टी का घर उनके परिवारजनों का आश्रयस्थल था। रोजमर्राकी जिंदगी में खेत खलिहारी के अलावा गाय, भैंस, बकरी आदि के पालन पोषण का काम भी उनके उपर ही था। सालभर में अपने पैतृक जमीन से धान की खेतीवाड़ी के साथ-साथ साग- सब्जी व नींबू का फल उत्पादन कर उनके परिवार का पालन पोषणकरते थे। फिर भी बढ़ती हुई मंहगाई की चपेट में आने पर उन्होंने अपने गांव के पास पड़ोसी को देखते हुए गांव से लगे हुए जंगल में अर्जुन व आसन पौधों में तसर चाष करने का मन बनाया। इसमें उनकी पत्नी जाम्बी हो ने भी उनकी मदद की।

सन 2014 में शरत और उनकी पत्नी पहली वार जोडेई फसल (अक्टूबर- नवम्बर महीने) में 100 रोग मुक्त चकत्तों का कीटपालन करके 88 कोसों प्रति रोमुच की दर से कुल रू 10800.00 की आय पैदा की गयी। जिससे उनके अंदर नया जोश एवं तसर चाष के प्रति उमंग पैदा हुई। उस दिन से वह कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। तथा अपने धान की खेती के जमीन के किनारे अर्जुनव आसन खाद्य पौधों को उगाया तथा भेड़ बकरी चराने के समय उसमें तसर कीटपालन करके अतिरिक्त कोसों का उत्पादन करनेमें सक्षम हुआ। केन्द्रीय रेशम बोर्ड, की इकाइयों से तसर खेती संबंधी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों की जानकारी प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त करने के पश्चात वह अभी निजी जमीन में एक चॉकी बागान तैयार करके इसमें चॉकी कीटपालन चालू कर दिया है जिससे उत्तरावस्था कीटपालन व्यवस्थित ढंग से संपादित हो पा रही है। कीटपालन में दक्षता वृद्धिके मद्देनजर उन्हें राज्य सरकार विभाग पिछले तीन साल से निजी बीज उत्पादक के तौर पर चयनित किया गया है। फलस्वरूप शरत कीटपालन के साथ- साथ हर साल दो बीजागार निष्पादन करते आ रहा है उनसे रोग मुक्त चकत्तों की आधार दर (6 रू प्रति रोमुच) से खरीद करके टीआर सीएस केदुजुआणीके साथी कीटपालकों के उपकृत होने के साथ साथ शरत को भी रोजगार में लाभ हुआ है।

नि:संदेह, इससे उनके परिवार के लोग लाभान्वित हो रहे हैं। जिसका प्रभाव उनके रोजमर्रा के जीवन में प्रतिफलित हुआ है। आज उनके पास मोटर साइकिल, टेलीविजन सेट तथा नामी – दामी गृह पोकरण मौजूद है आज उनका बड़ा लड़का कटक स्थित इंजीनियरिंग कॉलेज में मेकनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा कोर्स की पढ़ाई कर रहा है तथा लड़की ठाकुरमुंडा ब्लॉक के पड़ियाबड़ा कॉलेज में इस साल 12 वीं कक्षा में पढ़ रही है।

धान चाष की तरह तसर चाष को भी शरत पारंपरिक फसल के रूप में प्रयोग किया तथा हर साल कम से कम दो फसल तसर कीटपालन के साथ निजी बीजागार निष्पादन के जरिए अपना रोमुच की मांग पूरीकरने के अलावा दूसरे तसर किसानों के अंडों की मांग को भी पूरा करने में सक्षम हुआ है इससे ने केवल उनका आर्थिक मानदंड में वृद्धि आई है। बल्कि सामाजिक रहन सहन तथा परंपरागत जीवनशैली में भी बदलाव आया है। तसर किसान तथा निजी बीज उत्पादक के रूप में न केवल वह अपने क्षेत्र में दूसरों के लिए आदर्श उदाहरण बने हुए हैं अपितु निकटवर्ती झारखंड राज्य के तसर किसानों को भी स्वस्थ डिंभ समूह आपूर्ति की आपूर्ति भी की है। अभि उनका सिर्फ एक ही उद्देश्य है कि जैसे भी हो वह अपने परिवारजनों के आश्रय हेतु एक स्थायी पक्का मकान बना सके तथा अपनी इकलौती बेटी का अच्छी तरह से विवाह कर सकें।

लेखक व विवरण प्रस्तुत कर्ता : श्री के वेदव्यास, वैज्ञानिक- डी व श्री गौरांग चरण पात्र, तकनीकी सहायक , बुबीप्रवप्रके, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बारीपदा।